अज़: शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

Kapde Pak Karne Ka Tariqa (Hindi)

कपड़े पाक करने का त़रीक़ा

(मअ़ नजासतों का बयान)

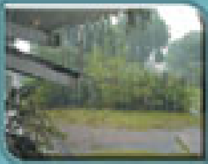

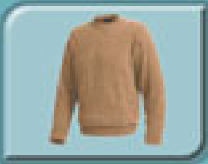
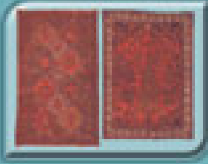

दीवार, ज़मीन और दरख़्त वग़ैरा कैसे पाक हों 10   जानवरों की सूखी हड्डियां 14

बारिश के पानी के अह़काम 16   तीन म-दनी मुन्नियों की मौत का अलमनाक वाक़िआ़ 20

नापाक कपड़े साथ धोने का मस्अला 29   कारपेट पाक करने का त़रीक़ा 33

काफ़िरों के इस्ति'माल शुदा स्वेटर वग़ैरा 39

पेशकश : मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे
मदीना व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(कपड़े पाक करने का त़रीक़ा)

येह रिसाला (कपड़े पाक करने का त़रीक़ा)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 • E-mail : tarajimhind@gmail.com

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

कपड़े पाक करने का त़रीक़ा

(मअ़ नजासतों का बयान)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने **तक़र्रुब** निशान है : "जिस ने मुझ पर **सो[100] मर्तबा दुरूदे पाक** पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों[2] आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शु–हदा के साथ रखेगा।"

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जि. 10, स. 253, ह़दीस : 17298)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत के लिये त़हारत के वोह अह़काम सीखने फ़र्ज़े ऐ़न हैं जिन से नमाज़ दुरुस्त हो सके। येह तह़रीर उन ज़रूरी मसाइल में से बा'ज़ पर **मुश्तमिल** है लिहाज़ा शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (40 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़िये, पढ़ने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुद ही इस की अफ़ादियत समझ में आ जाएगी।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

नजासत की अक़्साम

नजासत की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ नजासते ग़लीज़ा ﴾2﴿ नजासते ख़फ़ीफ़ा।

(फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जि. 1, स. 10)

नजासते ग़लीज़ा

﴾1﴿ इन्सान के बदन से जो ऐसी चीज़ निकले कि उस से ग़ुस्ल या वुज़ू वाजिब हो **नजासते ग़लीज़ा** है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता ख़ून, पीप, मुंह भर क़ै, हैज़ व निफ़ास व इस्तिह़ाज़े का ख़ून, मनी, मज़ी, वदी। (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 1, स. 46) ﴾2﴿ जो ख़ून ज़ख़्म से बहा न हो पाक है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 280) ﴾3﴿ दुखती आंख से जो पानी निकले, **नजासते ग़लीज़ा** है। यूंही नाफ़ या पिस्तान से दर्द के साथ पानी निकले, **नजासते ग़लीज़ा** है। (ऐज़न, स. 269 ,270) ﴾4﴿ ख़ुश्की के हर जानवर का बहता ख़ून, मुर्दार का गोश्त और चर्बी, (या'नी जिस जानवर में बहता ख़ून होता है वोह अगर बिग़ैर ज़ब्हे शर-ई के मर जाए तो मुर्दार है, नीज़ मजूसी या बुत परस्त या मुरतद का ज़बीह़ा भी मुरदार है अगर्चे उस ने ह़लाल जानवर म-सलन बकरी वग़ैरा को "بِسْمِ اللهِ اَللهُ اَکْبَر" पढ़ कर ज़ब्ह़ किया हो उस का गोश्त पोस्त (चमड़ा), सब नापाक हो गया। हां मुसल्मान ने ह़राम जानवर को भी अगर शर-ई त़रीक़े से ज़ब्ह़ कर लिया तो

उस का गोश्त पाक है अगर्चे खाना ह़राम है, सिवा **ख़िन्ज़ीर** के कि वोह **नजिसुल ऐन** है किसी त़रह़ पाक नहीं हो सकता) ﴾5﴿ ह़राम चौपाए जैसे कुत्ता, शेर, लोमड़ी, बिल्ली, चूहा, गधा, **ख़च्चर**, हाथी और सुवर का पाख़ाना, पेशाब और घोड़े की लीद और ﴾6﴿ हर ह़लाल चौपाए का पाख़ाना जैसे गाय भेंस का गोबर, बकरी ऊंट की मेंगनी और ﴾7﴿ जो परन्दा कि ऊंचा न उड़े उस की बीट जैसे मुर्ग़ी और बत़ (बत़ख़) छोटी हो ख़्वाह बड़ी, और ﴾8﴿ हर क़िस्म की शराब और नशा लाने वाली ताड़ी और सेंधी और ﴾9﴿ सांप का पाख़ाना पेशाब और ﴾10﴿ उस जंगली सांप और मेंडक का गोश्त जिन में बहता ख़ून होता है अगर्चे ज़ब्ह़ किये गए हों, यूंहीं उन की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो और ﴾11﴿ सुवर का गोश्त और हड्डी और बाल अगर्चे ज़ब्ह़ किया गया हो येह सब **नजासते ग़लीज़ा** हैं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 112, 113)

﴾12﴿ छिपकली या गिरगट का ख़ून **नजासते ग़लीज़ा** है। (ऐज़न, स. 113) ﴾13﴿ हाथी के सूंड की रुत़ूबत और शेर, कुत्ते, चीते और दूसरे दरिन्दे चौपायों का लुआ़ब (थूक) **नजासते ग़लीज़ा** है।

(ऐज़न)

दूध पीते बच्चों का पेशाब नापाक है

अक्सर अ़वाम में जो येह मश्हूर है कि दूध पीते बच्चे चूंकि खाना नहीं खाते इस लिये उन का पेशाब नापाक नहीं होता। येह ग़लत़ है, **दूध** पीते बच्चे और बच्ची का पेशाब पाख़ाना भी **नजासते ग़लीज़ा** है। इसी त़रह़ अगर दूध पीते बच्चे ने दूध डाल दिया अगर मुंह भर है तो **नजासते ग़लीज़ा** है।

(मुलख़्ख़सन बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 112, मक-त-बतुल मदीना)

नजासते ग़लीज़ा का हुक्म

नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन पर एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना **फ़र्ज़** है, बिग़ैर पाक किये अगर नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ न होगी। और इस सूरत में जान बूझ कर नमाज़ पढ़ना सख़्त **गुनाह** है, और अगर नमाज़ को हलका जानते हुए इस त़रह़ नमाज़ पढ़ी तो **कुफ़्र** है।

नजासते ग़लीज़ा अगर दिरहम के बराबर कपड़े या बदन पर लगी हुई हो तो उस का पाक करना **वाजिब** है अगर बिग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ **मक्रूहे तह़रीमी** होगी और ऐसी सूरत में कपड़े या बदन को पाक कर के **दोबारा नमाज़** पढ़ना वाजिब है, जान बूझ कर इस त़रह़ नमाज़ पढ़नी **गुनाह** है। अगर **नजासते ग़लीज़ा** दिरहम से

कम कपड़े या बदन पर लगी हुई है तो उस का पाक करना **सुन्नत** है अगर बिग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो जाएगी, मगर ख़िलाफ़े सुन्नत, ऐसी नमाज़ को दोहरा लेना बेहतर है ।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 111, मक-त-बतुल मदीना)

दिरहम की मिक़्दार की वज़ाह़त

नजासते ग़लीज़ा का दिरहम या उस से कम या ज़ियादा होने से मुराद येह है कि नजासते ग़लीज़ा अगर **गाढ़ी** हो म–सलन पाख़ाना, लीद वग़ैरा तो दिरहम से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशा (4.374 ग्राम) है, लिहाज़ा अगर नजासत दिरहम से ज़ियादा या कम है तो उस से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशे से कम या ज़ियादा होना है और अगर नजासते ग़लीज़ा **पतली** हो जैसे पेशाब वग़ैरा तो दिरहम से मुराद लम्बाई चौड़ाई है या'नी हथेली को ख़ूब फैला कर हमवार रखिये और उस पर आहिस्तगी से इतना पानी डालिये कि इस से ज़ियादा पानी न रुक सके, अब जितना पानी का फैलाव है उतना बड़ा दिरहम समझा जाएगा ।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 111, मक-त-बतुल मदीना)

किसी कपड़े या बदन पर चन्द जगह **नजासते ग़लीज़ा** लगी और किसी जगह दिरहम के बराबर नहीं, मगर मज्मूआ़ दिरहम के बराबर

है, तो दिरहम के बराबर समझी जाएगी और ज़ाइद है तो ज़ाइद। **नजासते ख़फ़ीफ़ा** में भी मज्मूए ही पर हुक्म दिया जाएगा।

(ऐज़न, स. 115)

नजासते ख़फ़ीफ़ा

जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है, (जैसे गाय, बैल, भेंस, बकरी, ऊंट वग़ैरहा) उन का पेशाब, नीज़ घोड़े का पेशाब और जिस परिन्द का गोश्त ह़राम है, ख़्वाह शिकारी हो या नहीं, (जैसे कव्वा, चील, शिकरा, बाज़) उस की बीट **नजासते ख़फ़ीफ़ा** है। (ऐज़न, स. 113)

नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म

नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म येह है कि कपड़े के जिस ह़िस्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी है अगर उस की चौथाई से कम है तो **मुआ़फ़** है, म-सलन आस्तीन में **नजासते ख़फ़ीफ़ा** लगी हुई है तो अगर आस्तीन की चौथाई से कम है या दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम है या इसी त़रह़ हाथ में लगी है तो हाथ की चौथाई से कम है तो **मुआ़फ़** है या'नी इस सूरत में पढ़ी गई नमाज़ हो जाएगी और अलबत्ता अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बिग़ैर पाक किये **नमाज़ न होगी।** (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 111)

जुगाली का हुक्म

हर चौपाए की **जुगाली** का वोही हुक्म है जो उस के पाख़ाने का। (ऐज़न, स. 113, दुर्रे मुख़्तार, जि. 1, स. 620) हैवानात का अपने चारे को मे'दे में से निकाल कर मुंह में दोबारा चबाना **जुगाली** कहलाता है। जैसा कि अक्सर गाय और ऊंट अपना मुंह चलाते रहते हैं और उन से साबुन की त़रह़ झाग निकलता है, उन की (या'नी गाय और ऊंट की) **जुगाली** में निकलने वाला झाग वग़ैरा **नजासते ग़लीज़ा** है।

पित्ते का हुक्म

हर जानवर के **पित्ते** का वोही हुक्म है जो उस के पेशाब का, ह़राम जानवरों का **पित्ता नजासते ग़लीज़ा** और ह़लाल का **नजासते ख़फ़ीफ़ा** है। (दुर्रे मुख़्तार, जि. 1, स. 620, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 113)

जानवरों की क़ै

हर जानवर की **क़ै** उस के **बीट** का हुक्म रखती है या'नी जिस की **बीट** पाक जैसे चिड़िया या कबूतर उस की **क़ै** भी पाक है और जिस की **नजासते ख़फ़ीफ़ा** है जैसे बाज़ या कव्वा, उस की **क़ै** भी **नजासते ख़फ़ीफ़ा**। और जिस की **नजासते ग़लीज़ा** है जैसे बत़ (बत़ख़) या मुर्ग़ी, उस की **क़ै** भी **नजासते ग़लीज़ा**। और **क़ै** से मुराद वोह खाना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

पानी वग़ैरा है जो पोटे (या'नी मे'दे) से बाहर निकले कि जिस जानवर की बीट नापाक है उस का **पोटा** मा'दिने नजासत (नजासतों की जगह) है पोटे से जो चीज़ बाहर आएगी ख़ुद नजिस (नापाक) होगी या नजिस से मिल कर आएगी बहर ह़ाल मिस्ले **बीट** नजासत रखेगी **ख़फ़ीफ़ा** में ख़फ़ीफ़ा, **ग़लीज़ा** में ग़लीज़ा, ब ख़िलाफ़ उस चीज़ के जो अभी पोटे तक न पहुंची थी कि निकल आई। म-सलन **मुर्ग़ी** ने पानी पिया अभी गले ही में था कि **उच्छू**[1] लगा और निकल गया येह पानी बीट का हुक्म न रखेगा। لِاَنَّهٗ مَااسْتَحَالَ اِلٰى نَجَاسَةٍ وَّلَالَافِىْ مَحَلِّهَا۔ (या'नी क्यूं कि उस ने नजासत में ह़ुलूल नहीं किया (मिक्स न हुवा) और न ही नजासत की जगह से मिला) बल्कि इसे सुअ्र या'नी झूटे का हुक्म दिया जाएगा कि उस के मुंह से मिल कर आया है। उस जानवर का झूटा नजासते ग़लीज़ा या ख़फ़ीफ़ा या मश्कूक या मक्रूह या त़ाहिर (या'नी पाक) जैसा होगा वैसा ही उस चीज़ को हुक्म दिया जाएगा जो मे'दे तक पहुंचने से पहले बाहर आई जो मुर्ग़ी छूटी फिरे उस का झूटा मक्रूह है येह पानी भी मक्रूह होगा और पोटे (मे'दे) में पहुंच कर आता तो नजासते ग़लीज़ा होता।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 390, 391)

---

1. पानी पीने के दौरान बा'ज़ अवक़ात गले में फन्दा सा लगता है और खांसी उठती है उस को "उच्छू लगना" कहते हैं।

दूध या पानी में नजासत पड़ जाए तो......?

नजासते ग़लीज़ा और ख़फ़ीफ़ा के जो अलग अलग हुक्म बताए गए हैं येह अह़काम उसी वक़्त हैं जब कि **बदन** या **कपड़े** में लगे। अगर किसी पतली चीज़ म-सलन दूध या पानी में नजासत पड़ जाए चाहे ग़लीज़ा हो या ख़फ़ीफ़ा दोनों[2] सूरतों में वोह दूध या पानी जिस में नजासत पड़ी है **नापाक** हो जाएगा अगर्चे एक ही क़त़रा नजासत पड़ी हो। नजासते ख़फ़ीफ़ा अगर नजासते ग़लीज़ा में मिल जाए तो वोह तमाम नजासते ग़लीज़ा हो जाएगी।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 112, 113)

दीवार, ज़मीन, दरख़्त वग़ैरा कैसे पाक हों ?

﴾1﴿ **नापाक** ज़मीन अगर सूख जाए और नजासत का असर या'नी रंग व बू जाते रहें तो वोह ज़मीन **पाक** हो गई ख़्वाह वोह नापाकी हवा से सूखी हो या धूप से या आग से, लिहाज़ा उस ज़मीन पर **नमाज़** पढ़ सकते हैं मगर उस ज़मीन से **तयम्मुम** नहीं कर सकते। ﴾2﴿ दरख़्त और घास और दीवार और ऐसी ईंट जो ज़मीन में जड़ी हो, येह सब ख़ुश्क हो जाने से पाक हो गए (जब कि नजासत का असर रंग व बू जाते रहे हों) और अगर ईंट जड़ी हुई न हो तो ख़ुश्क होने से पाक न होगी बल्कि धोना

ज़रूरी है। यूंही दरख़्त या घास (नजासत) सूखने के पेशतर काट लें, तो त़हारत (या'नी पाक करने) के लिये धोना ज़रूरी है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 123) ❁3❁ अगर पथ्थर ऐसा हो जो ज़मीन से जुदा न हो सके तो ख़ुश्क होने से पाक हो जाएगा जब कि नजासत का असर ज़ाइल हो जाए वरना धोने की ज़रूरत है। (ऐज़न) ❁4❁ जो चीज़ ज़मीन से **मुत्तसिल** (या'नी मिली हुई) थी और **नजिस** हो गई, फिर ख़ुश्क होने (और नजासत का असर दूर हो जाने) के बा'द अलग की गई, तो अब भी पाक ही है। (ऐज़न, स. 124) ❁5❁ जो चीज़ सूखने या रगड़ने वग़ैरा से पाक हो गई फिर उस के बा'द गीली हो गई तो वोह चीज़ नापाक न होगी (ऐज़न) जैसे ज़मीन पर पेशाब पड़ने से वोह नापाक हो गई फिर वोह ज़मीन सूख गई और नजासत का असर ख़त्म हो गया तो वोह ज़मीन पाक हो गई। अब अगर वोह ज़मीन फिर किसी पाक चीज़ से गीली हो गई तो नापाक नहीं होगी।

ख़ून आलूद ज़मीन पाक करने का त़रीक़ा

बच्चे या बड़े ने ज़मीन पर पेशाब पाख़ाना कर दिया या ज़ख़्म वग़ैरा से ख़ून या पीप या जानवर ज़ब्ह करते वक़्त निकला हुवा ख़ून ज़मीन पर गिर गया और बिग़ैर पानी के वैसे ही किसी कपड़े वग़ैरा से

पूंछ लिया, सूखने और नजासत का असर ख़त्म हो जाने के बा'द वोह ज़मीन पाक हो गई। उस पर नमाज़ पढ़ सकते हैं।

गोबर से लीपी हुई ज़मीन

जो ज़मीन गोबर से **लीसी** या **लीपी** गई अगर्चे वोह सूख जाए फिर भी ऐन उस ज़मीन पर नमाज़ जाइज़ नहीं, अलबत्ता ऐसी ज़मीन जो गोबर से **लीसी** या **लीपी** गई हो, उस के सूख जाने के बा'द उस पर कोई मोटा कपड़ा बिछा कर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ दुरुस्त होगी।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 126, मक-त-बतुल मदीना)

जिन परन्दों की बीट पाक है

﴾1﴿ चिमगादड़[1] की **बीट** और पेशाब दोनों[2] पाक हैं (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जि. 1, स. 574, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 113) ﴾2﴿ जो ह़लाल परन्दे ऊंचे उड़ते हैं, जैसे (चिड़िया), कबूतर, मैना, मुर्ग़ाबी वग़ैरा इन की बीट **पाक** है। (ऐज़न)

मछली का ख़ून पाक है

मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून और **ख़च्चर** और गधे का लुआ़ब और पसीना **पाक** है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 114, मक-त-बतुल मदीना)

---

1. चिमगादड़ एक अंधेरा पसन्द परन्दा है जो दिन के वक़्त दरख़्तों और छतों वग़ैरा में उल्टा लटका रहता और रात को उड़ता है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

पेशाब की बारीक छींटें

﴾1﴿ पेशाब की निहायत बारीक छींटें सूई की नोक बराबर की बदन या कपड़े पर पड़ जाएं, तो कपड़ा और बदन **पाक** रहेगा। (आ़लमगीरी, जि. 1, स. 46, ऐज़न) ﴾2﴿ जिस कपड़े पर पेशाब की ऐसी ही बारीक छींटें पड़ गईं, अगर वोह कपड़ा पानी में पड़ गया तो पानी भी नापाक न होगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 114)

गोश्त में बचा हुवा ख़ून

गोश्त, तिल्ली, कलेजी में जो ख़ून बाक़ी रह गया **पाक** है और अगर येह चीजे़ं बहते ख़ून में सन जाएं (या'नी आलूद हो जाएं) तो नापाक हैं, बिग़ैर धोए पाक न होंगी। (ऐज़न)

जानवरों की सूखी हड्डियां

सुवर के इलावा तमाम जानवरों की वोह हड्डी जिस पर मुर्दार की चिक्नाई न लगी हो पाक है, और बाल और दांत भी पाक हैं।

(ऐज़न, स. 117)

ह़राम जानवर का दूध

ह़राम जानवरों का दूध नजिस है, अलबत्ता घोड़ी का दूध **पाक** है मगर खाना जाइज़ नहीं। (ऐज़न, स. 115)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

चूहे की मेंगनी

चूहे की मेंगनी (नापाक है मगर) गेहूं में मिल कर पिस गई या तेल में पड़ गई तो आटा और तेल **पाक** है, हां अगर मज़े में फ़र्क़ आ जाए तो नजिस (नापाक) है और अगर रोटी के अन्दर मिली तो उस के आस पास से थोड़ी सी अलग कर दें, बाक़ी में कुछ ह़रज नहीं।

(आ़लमगीरी, जि. 1, स. 46, 48, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 115)

ग़लाज़त पर बैठने वाली मक्खियां

﴾1﴿ पाख़ाने पर से मख्खियां उड़ कर कपड़े पर बैठें कपड़ा नजिस (नापाक) न होगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 116, मक-त-बतुल मदीना)

﴾2﴿ रास्ते की कीचड़ (चाहे बारिश की हो या कोई और) **पाक** है जब तक उस का नजिस होना मा'लूम न हो, तो अगर पाउं या कपड़े में लगी और बे धोए नमाज़ पढ़ ली हो गई मगर धो लेना बेहतर है। (ऐज़न)

बारिश के पानी के अह़काम

﴾1﴿ छत के परनाले से मींह (बारिश) का पानी गिरे वोह पाक है अगर्चे छत पर जा बजा नजासत पड़ी हो, अगर्चे नजासत परनाले के मूंह पर हो, अगर्चे नजासत से मिल कर जो पानी गिरता हो वोह निस्फ़ से कम या

बराबर या ज़ियादा हो जब तक नजासत से पानी के किसी वस्फ़ में **तग़य्युर** न आए (या'नी जब तक नजासत की वजह से पानी का रंग या बू या ज़ाएक़ा तब्दील न हो जाए) येही सह़ीह़ है और इसी पर ए'तिमाद है और अगर मींह (बरसात) रुक गया और पानी का बहना मौक़ूफ़ हो गया तो अब वोह ठहरा हुवा पानी और जो छत से टपके **नजिस** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 52) ﴾2﴿ यूंही नालियों से बरसात का बहता पानी पाक है जब तक नजासत का रंग, या बू, या मज़ा उस में ज़ाहिर न हो, रहा उस से वुज़ू करना अगर उस पानी में नजासते **मरइय्या** (या'नी नज़र आने वाली नजासत) के अज्ज़ा ऐसे बहते जा रहे हों कि जो चुल्लू लिया जाएगा उस में एक आध ज़र्रा उस का भी ज़रूर होगा जब तो हाथ में लेते ही नापाक हो गया वुज़ू उस से **ह़राम** वरना जाइज़ है और बचना बेहतर है। (ऐज़न) ﴾3﴿ नाली का पानी कि बा'द बारिश के ठहर गया अगर उस में नजासत के अज्ज़ा मह़सूस हों या उस का रंग व बू मह़सूस हो तो नापाक है वरना पाक। (ऐज़न)

गलियों में खड़ा हुवा बारिश का पानी

निचान वाली गलियों और सड़कों पर बारिश का जो पानी खड़ा हो जाता है वोह पाक है अगर्चे उस का रंग गदला होता है। बा'ज़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

अवक़ात गटर का पानी भी उस में शामिल हो जाता है लेकिन यहां भी येही क़ाइदा है कि नापाकी के सबब से इस पानी के रंग या मज़ा या बू में तब्दीली आई तो नापाक है वरना पाक हां अगर बारिश थम गई, पानी भी बहना बन्द हो गया और दह दर दह से कम है और उस में कोई नजासत या उस के अज्ज़ा नज़र आ रहे हैं तो अब नापाक है। इसी त़रह़ उस में किसी ने पेशाब कर दिया तो नापाक हो गया। चप्पल से उड़ कर जो कीचड़ के छींटे पाजामे के पिछले ह़िस्से पर पड़ते हैं वोह पाक हैं जब तक यक़ीनी त़ौर पर इन का नापाक होना मा'लूम न हो।

सड़क पर छिड़के जाने वाले पानी के छींटे

सड़क पर पानी छिड़का जा रहा था ज़मीन से छींटें उड़ कर कपड़े पर पड़ीं, कपड़ा नजिस न हुवा मगर धो लेना बेहतर है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 116, मक-त-बतुल मदीना)

ढेलों से पाकी लेने के बा'द आने वाला पसीना

बा'द पाख़ाना पेशाब के ढेलों से इस्तिन्जा कर लिया, फिर उस जगह से पसीना निकल कर कपड़े या बदन में लगा तो बदन और कपड़े नापाक न होंगे।

(आ़लमगीरी, जि. 1, स. 48, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 117)

कुत्ता बदन से छू जाए

कुत्ता बदन या कपड़े से छू जाए तो अगर्चे उस का जिस्म तर हो बदन और कपड़ा पाक है, हां अगर उस के बदन पर नजासत लगी हो तो और बात है या उस का लुआ़ब लगे तो नापाक कर देगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 117)

कुत्ता आटे में मुंह डाल दे तो ?

कुत्ते वग़ैरा किसी ऐसे जानवर (म-सलन सुवर, शेर, चीता, भेड़िया, हाथी, गीदड़ और दूसरे दरिन्दों में से किसी) ने जिस का लुआ़ब नापाक है, आटे में मूंह डाला तो अगर गुंधा हुवा था तो जहां उस का मूंह पड़ा उस को अ़लाह़िदा कर दे बाक़ी पाक है और सूखा था तो जितना तर हो गया वोह फेंक दे।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 117)

कुत्ता बरतन में मुंह डाल दे

कुत्ते ने बरतन में मूंह डाला तो अगर वोह चीनी या धात का है या मिट्टी का रोग़नी या इस्ति'माली चिकना तो तीन बार धोने से पाक हो जाएगा वरना हर बार सुखा कर। हां चीनी में बाल (या'नी बहुत बारीक शिगाफ़) हो या और बरतन में दराड़ हो तो तीन बार सुखा कर पाक होगा फ़क़त

धोने से पाक न होगा। (ऐज़न, स. 64)

मटके को कुत्ते ने ऊपर (बाहरी ह़िस्सों) से चाटा उस में का पानी नापाक न होगा। (ऐज़न)

बिल्ली पानी में मुंह डाल दे तो ?

घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, सांप, छिपकली का झूटा मकरूह है। (ऐज़न, स. 65)

तीन म-दनी मुन्नियों की मौत का अलम नाक वाक़िआ़

दूध पानी और खाने पीने की चीज़ें ढक कर रखनी चाहिएं। बाबुल मदीना कराची का इ़ब्रतनाक वाक़िआ़ है कि एक मियां बीवी अपनी तीन छोटी छोटी बच्चियों को पड़ोसन या किसी अ़ज़ीज़ा के सिपुर्द कर के ह़ज के लिये गए, ह़ज से क़ब्ल ही यकायक तीनों म–दनी मुन्नियां एक साथ मौत की नींद सो गईं ! कोहराम पड़ गया, मां बाप ह़ज के बिग़ैर ही रोते धोते **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से बाबुल मदीना आ पहुंचे, तह़क़ीक़ करने पर इन्किशाफ़ हुवा कि दूध खुला हुवा रखा था उस में छिपकली गिर कर मर गई थी वोही दूध बच्चियों ने पिया और ज़ह्र के असर से येह अल्मिय्या पेश आया। कहा जाता है अगर

छिपकली मशरूब में मर कर फट जाए तो 100 आदमियों के लिये उस का ज़ह्‌र काफ़ी है !

जानवरों का पसीना

जिस का झूटा नापाक है उस का पसीना और लुआ़ब (या'नी थूक) भी नापाक है और जिस का झूटा पाक उस का पसीना और लुआ़ब भी पाक और जिस का झूटा मक्रूह उस का लुआ़ब और पसीना भी मक्रूह।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 66)

गधे का पसीना पाक है

गधे, **ख़च्चर** का पसीना अगर कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है चाहे कितना ही ज़ियादा लगा हो। (ऐज़न)

ख़ून वाले मुंह से पानी पीना

किसी के मुंह से इतना ख़ून निकला कि थूक में सुर्ख़ी आ गई और उस ने फ़ौरन पानी पिया तो येह झूटा (पानी) नापाक है और सुर्ख़ी जाती रहने के बा'द उस पर लाज़िम है कि कुल्ली कर के मुंह पाक करे और अगर कुल्ली न की और चन्द बार थूक का गुज़र मौज़ए नजासत (या'नी नापाक हि़स्से) पर हुवा ख़्वाह निगलने में या थूकने में यहां तक कि नजासत का असर न रहा तो त़हारत हो गई इस के बा'द अगर पानी

पियेगा तो पाक रहेगा अगर्चे ऐसी सूरत में थूक निगलना सख़्त नापाक बात और गुनाह है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 63)

औ़रत के पर्दे की जगह की रुत़ूबत

औ़रत के पेशाब के मक़ाम से जो रुत़ूबत निकले **पाक** है, कपड़े या बदन में लगे तो धोना ज़रूरी नहीं हां धो लेना बेहतर है।

(ऐज़न, स. 117)

सड़ा हुवा गोश्त

जो गोश्त सड़ गया बदबू ले आया उस का खाना ह़राम है अगर्चे नजिस (नापाक) नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 117, मक-त-बतुल मदीना)

ख़ून की शीशी

अगर नमाज़ पढ़ी और जेब वग़ैरा में शीशी है और उस में पेशाब या ख़ून या शराब है तो नमाज़ न होगी और जेब में अन्डा है और उस की ज़र्दी ख़ून हो चुकी है तो नमाज़ हो जाएगी। (ऐज़न, स. 114) टेस्ट करवाने के लिये जाते हुए ख़ून की शीशी जेब में हो तो नमाज़ पढ़ते वक़्त बाहर निकाल दीजिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

मय्यित के मुंह का पानी

मुर्दे के मुंह का पानी नापाक है।

(फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 268, दुर्रे मुख़्तार, जि. 1, स. 290)

नापाक बिछोना

﴾1﴿ भीगी हुई नापाक ज़मीन या नजिस (नापाक) बिछोने पर सूखे हुए पाउं रखे और पाउं में तरी आ गई तो नजिस (नापाक) हो गए और सील (या'नी ऐसी नमी जो पाउं को तर न कर सके, ठन्डक) है तो नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 115)

﴾2﴿ नजिस (नापाक) कपड़ा पहन कर या नजिस (नापाक) बिछोने पर सोया और पसीना आया अगर पसीने से वोह नापाक जगह भीग गई फिर उस से बदन तर हो गया तो नापाक हो गया वरना नहीं।

(ऐज़न, स. 116)

गीली रूमाली

मियानी[1] तर थी और हवा निकली तो कपड़ा नजिस न होगा।

(ऐज़न, स. 116)

1. मियानी या'नी दोनों पाइंचों के बीच का कपड़ा। इस को रूमाली भी कहते हैं।)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وَسلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

इन्सानी खाल का टुकड़ा

आदमी की खाल अगर्चे नाख़ुन बराबर थोड़े पानी (या'नी दह दर दह से कम) में पड़ जाए वोह पानी नापाक हो गया और ख़ुद नाख़ुन गिर जाए तो नापाक नहीं। (ऐज़न)

उपला (सूखा हुवा गोबर)

﴾1﴿ उपले (या'नी गाय भेंस का सूखा हुवा गोबर) जला कर खाना पकाना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 124) ﴾2﴿ उपले (या'नी गाय भेंस के सूखे हुए गोबर) का धुवां रोटी में लगा तो रोटी नापाक न हुई। (ऐज़न, स. 116) ﴾3﴿ उपले की राख पाक है और अगर राख होने से क़ब्ल बुझ गया तो नापाक। (ऐज़न, स. 118)

तवे पर नापाक पानी छिड़क दिया तो ?

तन्नूर या तवे पर नापाक पानी का छींटा डाला और आंच से उस की तरी जाती रही अब जो रोटी लगाई गई पाक है।

(ऐज़न, स. 124)

ह़राम जानवर का गोश्त और चमड़ा कैसे पाक हो

सुवर के सिवा हर जानवर ह़लाल हो या ह़राम जब कि ज़ब्ह़ के क़ाबिल हो, और **बिस्मिल्लाह** कह कर ज़ब्ह़ किया गया तो उस का गोश्त और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

खाल पाक है, कि नमाज़ी के पास अगर वोह गोश्त है या उस की खाल पर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ हो जाएगी मगर ह़राम जानवर (का गोश्त वग़ैरा खाना वग़ैरा) ज़ब्ह़ से ह़लाल न होगा ह़राम ही रहेगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 124)

बकरे की खाल पर बैठने से आ़जिज़ी पैदा होती है

दरिन्दे की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो न उस पर बैठना चाहिये न नमाज़ पढ़नी चाहिये कि मिज़ाज में सख़्ती और तकब्बुर पैदा होता है, बकरी (बकरा) और मेंढे की खाल पर बैठने और पहनने से मिज़ाज में नर्मी और इन्किसार (आ़जिज़ी) पैदा होता है, कुत्ते की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो या वोह ज़ब्ह़ कर लिया गया हो इस्ति'माल में न लाना चाहिये कि आइम्मा के इख़्तिलाफ़ और अ़वाम की नफ़्रत से बचना मुनासिब है। (ऐज़न, स. 124, 125)

जो नजासत दिखाई देती है उस को **मरइय्या** और जो नहीं दिखाई देती उसे **ग़ैर मरइय्या** कहते हैं। (ऐज़न, स. 54)

गाढ़ी नजासत वाला कपड़ा किस त़रह़ धोए

नजासत अगर दलदार या'नी गाढ़ी हो जिसे नजासते **मरइय्या** कहते हैं (जैसे पाख़ाना, गोबर, ख़ून वग़ैरा) तो धोने में गिनती की कोई शर्त़

नहीं बल्कि उस को दूर करना ज़रूरी है, अगर एक बार धोने से दूर हो जाए तो एक ही मर्तबा धोने से पाक हो जाएगा और अगर चार पांच मर्तबा धोने से दूर हो तो चार पांच मर्तबा धोना पड़ेगा हां अगर तीन मर्तबा से कम में नजासत दूर हो जाए तो तीन बार पूरा कर लेना **मुस्तह़ब** है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 119, मक-त-बतुल मदीना)

अगर नजासत का रंग कपड़े पर बाक़ी रह जाए तो ?

अगर नजासत दूर हो गई मगर उस का कुछ असर, रंग या बू बाक़ी है तो उसे भी ज़ाइल करना लाज़िम है हां अगर उस का असर ब दिक़्क़त (या'नी दुश्वारी से) जाए तो असर दूर करने की ज़रूरत नहीं तीन मर्तबा धो लिया पाक हो गया, साबून या खटाई या गर्म पानी (या किसी क़िस्म के केमीकल वग़ैरा) से धोने की ह़ाजत नहीं। (ऐज़न)

पतली नजासत वाला कपड़ा पाक करने के मु-तअ़ल्लिक़ 6 म-दनी फूल

﴾1﴿ अगर नजासत रक़ीक़ (या'नी पतली जैसे पेशाब वग़ैरा) हो तो तीन मर्तबा धोने और तीनों मर्तबा ब क़ुव्वत (या'नी पूरी त़ाक़त से) निचोड़ने से पाक होगा और क़ुव्वत के साथ निचोड़ने के येह मा'ना हैं कि वोह शख़्स

अपनी त़ाक़त भर इस त़रह़ निचोड़े कि अगर फिर निचोड़े तो उस से कोई क़त़रा न टपके, अगर कपड़े का ख़याल कर के अच्छी त़रह़ नहीं निचोड़ा तो पाक न होगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 120)

﴾2﴿ अगर धोने वाले ने अच्छी त़रह़ निचोड़ लिया मगर अभी ऐसा है कि अगर कोई दूसरा शख़्स जो त़ाक़त में उस से ज़ियादा है निचोड़े तो दो एक बूंद टपक सकती है तो उस (पहले निचोड़ने वाले) के ह़क़ में पाक और दूसरे के ह़क़ में नापाक है। इस दूसरे की त़ाक़त का (पहले के ह़क़ में) ए'तिबार नहीं, हां अगर येह धोता और इसी क़दर निचोड़ता (जिस क़दर पहले वाले ने निचोड़ा था) तो पाक न होता। (ऐज़न) ﴾3﴿ पहली और दूसरी मर्तबा निचोड़ने के बा'द हाथ पाक कर लेना बेहतर है और तीसरी बार निचोड़ने से कपड़ा भी पाक हो गया और हाथ भी, और जो कपड़े में इतनी तरी रह गई हो कि निचोड़ने से एक आध बूंद टपकेगी तो कपड़ा और हाथ दोनों नापाक हैं। (ऐज़न) ﴾4﴿ पहली या दूसरी बार हाथ पाक नहीं किया, और उस की तरी से कपड़े का पाक ह़िस्सा भीग गया तो येह भी नापाक हो गया फिर अगर पहली बार के निचोड़ने के बा'द भीगा है तो उसे दो मर्तबा धोना चाहिये और दूसरी मर्तबा निचोड़ने के बा'द हाथ की तरी से भीगा है तो एक मर्तबा धोया जाए। यूंही अगर

उस कपड़े से जो एक मर्तबा धो कर निचोड़ लिया गया है, कोई पाक कपड़ा भीग जाए तो येह दो बार धोया जाए और अगर दूसरी मर्तबा निचोड़ने के बा'द उस से वोह कपड़ा भीगा तो एक बार धोने से पाक हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 120) **5** कपड़े को तीन मर्तबा धो कर हर मर्तबा ख़ूब निचोड़ लिया है कि अब निचोड़ने से न टपकेगा फिर उस को लटका दिया और उस से पानी टपका तो येह पानी पाक है और अगर ख़ूब नहीं निचोड़ा था तो येह पानी नापाक है। (ऐज़न, स. 121) **6** येह ज़रूरी नहीं कि एक दम तीनों बार धोएं बल्कि अगर मुख़्तलिफ़ वक़्तों बल्कि मुख़्तलिफ़ दिनों में येह ता'दाद पूरी की जब भी पाक हो जाएगा। (ऐज़न, 122)

बहते नल के नीचे धोने में निचोड़ना शर्त़ नहीं

फ़तावा अम्जदिया जिल्द 1 सफ़्ह़ा 35 में है कि येह (या'नी तीन मर्तबा धोने और निचोड़ने का) हुक्म उस वक़्त है जब थोड़े पानी में धोया हो, और अगर ह़ौज़े कबीर (या'नी दह दर दह या इस से बड़े ह़ौज़, नह्र, नदी, समुन्दर वग़ैरा) में धोया हो या (नल, पाइप या लोटे वग़ैरा के ज़रीए) बहुत सा पानी उस पर बहाया या (दरिया वग़ैरा) बहते पानी में धोया तो निचोड़ने की शर्त़ नहीं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

बहते पानी में पाक करने में निचोड़ना शर्त़ नहीं

फु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : दरी या टाट या कोई नापाक कपड़ा बहते पानी में रात भर पड़ा रहने दें पाक हो जाएगा और अस्ल येह है कि जितनी देर में येह ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया पाक हो गया कि बहते पानी से पाक करने में निचोड़ना शर्त़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 121)

पाक नापाक कपड़े साथ धोने का मस्अला

अगर बाल्टी या कपड़े धोने की मशीन में पाक कपड़ों के साथ एक भी नापाक कपड़ा पानी के अन्दर डाल दिया तो सारे ही कपड़े नापाक हो जाएंगे और बिला ज़रूरते शरइय्या ऐसा करना जाइज़ नहीं है। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (**मुख़र्रजा**) जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 792 पर फ़रमाते हैं : ''बिला ज़रूरत पाक शै को नापाक करना ना जाइज़ व गुनाह है।'' जिल्द 4 (**मुख़र्रजा**) **सफ़ह़ा** 585 पर फ़रमाते हैं : ''जिस्म व लिबास बिला ज़रूरते शरइय्या नापाक करना और येह **ह़राम** है।'' ''अल बह़रुर्राइक़'' में है : ''पाक चीज़ को नापाक करना **ह़राम** है।'' (अल बह़रुर्राइक़, जि. 1, स. 170)

लिहाज़ा ज़रूरी है कि पाक व नापाक कपड़े जुदा जुदा धोएं। अगर साथ ही धोना है तो नापाक कपड़े का नजासत वाला ह़िस्सा एह़तियात़ के साथ पहले पाक कर लीजिये फिर बेशक दीगर मैले कपड़ों के हमराह एक साथ वॉशिंग मशीन में उस को भी धो लीजिये।

नापाक कपड़े पाक करने का आसान त़रीक़ा

कपड़े पाक करने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि बाल्टी में नापाक कपड़े डाल कर ऊपर से नल खोल दीजिये, कपड़ों को हाथ या किसी सलाख़ वग़ैरा से इस त़रह़ डबोए रखिये कि कहीं से कपड़े का कोई ह़िस्सा पानी के बाहर उभरा हुवा न रहे। जब बाल्टी के ऊपर से उबल कर इतना पानी बह जाए कि ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तो अब वोह कपड़े और बाल्टी का पानी नीज़ हाथ या सलाख़ का जितना ह़िस्सा पानी के अन्दर था सब पाक हो गए जब कि कपड़े वग़ैरा पर नजासत का असर बाक़ी न हो। इस अ़मल के दौरान येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि पाक हो जाने के ज़न्ने ग़ालिब से क़ब्ल नापाक पानी का एक भी छींटा आप के बदन या किसी और चीज़ पर न पड़े। बाल्टी या बरतन का ऊपरी कनारा या अन्दरूनी

दीवार का कोई ह़िस्सा नापाक पानी वाला है और ज़मीन इतनी हमवार नहीं कि बाल्टी के हर त़रफ़ से पानी उभर के निकले और मुकम्मल कनारे वग़ैरा धुल जाएं तो ऐसी सूरत में किसी बरतन के ज़रीए़ या जारी पानी के नल के नीचे हाथ रख कर उस से बाल्टी वग़ैरा के चारों त़रफ़ इस त़रह़ पानी बहाइये कि कनारे और बक़िय्या अन्दरूनी ह़िस्से भी धुल कर पाक हो जाएं मगर येह काम शुरूअ़ ही में कर लीजिये कहीं पाक कपड़े दोबारा नापाक न कर बैठें !

वोशिंग मशीन में कपड़े पाक करने का त़रीक़ा

वॉशिंग मशीन में कपड़े डाल कर पहले पानी भर लीजिये और कपड़ों को हाथ वग़ैरा से पानी में दबा कर रखिये ताकि कोई ह़िस्सा उभरा हुवा न रहे, ऊपर का नल खुला रखिये अब निचला सूराख़ भी खोल दीजिये, इस त़रह़ ऊपर नल से पानी आता रहेगा और निचले सूराख़ से बहता रहेगा जब ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया होगा तो कपड़े और मशीन के अन्दर का पानी पाक हो जाएगा जब कि नजासत का असर कपड़ों वग़ैरा पर बाक़ी न हो । ज़रूरतन मशीन के ऊपरी कनारे वग़ैरा मज़्कूरा त़रीक़े पर शुरूअ़ ही में धो लेने चाहिएं ।

नल के नीचे कपड़े पाक करने का त़रीक़ा

मज़्कूरा त़रीक़े पर पाक करने के लिये बाल्टी या बरतन ही ज़रूरी नहीं, नल के नीचे हाथ में पकड़ कर भी पाक कर सकते हैं। म-सलन रूमाल नापाक हो गया, तो बेसिन में नल के नीचे रख कर इतनी देर तक पानी बहाइये कि ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तो पाक हो जाएगा। बड़ा कपड़ा या उस का नापाक ह़िस्सा भी इसी त़रीक़े पर पाक किया जा सकता है। मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि नापाक पानी के छींटे आप के कपड़े, बदन और अत़राफ़ में दीगर जगहों पर न पड़ें।

कारपेट पाक करने का त़रीक़ा

कारपेट (CARPET) का नापाक ह़िस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि पानी टपकना मौक़ूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये ह़त्ता कि पानी टपकना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी त़रह़ धो कर लटका दीजिये जब पानी टपकना बन्द हो जाएगा तो कारपेट पाक हो जाएगा। चटाई, चमड़े के चप्पल और मिट्टी के बरतन वग़ैरा जिन चीज़ों में पतली नजासत जज़्ब हो जाती हो इसी त़रीक़े पर पाक कीजिये। ऐसा नाज़ुक कपड़ा कि निचोड़ने से फट जाने का

अन्देशा हो वोह भी इसी त़रह़ पाक कीजिये। अगर नापाक कारपेट या कपड़ा वग़ैरा बहते पानी में (म–सलन दरिया, नह्‌र में या पाइप या टूंटी के जारी पानी के नीचे) इतनी देर तक रख छोड़ें कि ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तब भी पाक हो जाएगा। कारपेट पर बच्चा पेशाब कर दे तो उस जगह पर पानी के छींटे मार देने से वोह पाक नहीं होता। याद रहे ! एक दिन के बच्चे या बच्ची का पेशाब भी नापाक होता है।

नापाक महंदी से रंगा हुवा हाथ कैसे पाक हो ?

कपड़े या हाथ में नजिस रंग लगा, या नापाक महंदी लगाई तो इतनी मर्तबा धोएं कि साफ़ पानी गिरने लगे पाक हो जाएगा अगर्चे कपड़े या हाथ पर रंग बाक़ी हो।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 119, मक–त–बतुल मदीना)

नापाक तेल वाला कपड़ा धोने का मस्अला

कपड़े या बदन में नापाक तेल लगा था तीन मर्तबा धो लेने से पाक हो जाएगा अगर्चे तेल की चिक्नाई मौजूद हो, इस तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं कि साबून या गर्म पानी से धोए लेकिन अगर मुर्दार की चर्बी लगी थी तो जब तक इस की चिक्नाई न जाए पाक न होगा। (ऐज़न, स. 120)

अगर कपड़े का थोड़ा सा ह़िस्सा नापाक हो जाए

कपड़े का कोई ह़िस्सा नापाक हो गया और येह याद नहीं कि वोह कौन सी जगह है, तो बेहतर येह है कि पूरा ही धो डालें (या'नी जब बिल्कुल न मा'लूम हो कि किस ह़िस्से में नापाकी लगी है और अगर मा'लूम है कि म-सलन आस्तीन नजिस हो गई मगर येह नहीं मा'लूम कि आस्तीन का कौन सा ह़िस्सा है, तो पूरी आस्तीन का धोना ही पूरे कपड़े का धोना है) और अगर अन्दाज़े से सोच कर इस का कोई सा ह़िस्सा धो ले जब भी पाक हो जाएगा, और जो बिला सोचे हुए कोई टुकड़ा (ह़िस्सा) धो लिया जब भी पाक है मगर इस सूरत में अगर चन्द नमाज़ें पढ़ने के बा'द मा'लूम हो कि नजिस ह़िस्सा नहीं धोया गया तो फिर धोए और नमाज़ों का इआ़दा करे (या'नी दोबारा पढ़े) और जो सोच कर धो लिया था और बा'द को ग़-लत़ी मा'लूम हुई तो अब धो ले और नमाज़ों का इआ़दा (या'नी दोबारा अदा करने) की ह़ाजत नहीं।

(ऐज़न, स. 121, 122)

दूध से कपड़ा धोना कैसा ?

दूध और शोरबा और तेल से धोने से पाक न होगा कि इन से नजासत दूर न होगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 119, मक-त-बतुल मदीना)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

मनी वाले कपड़े पाक करने के 6 अह़काम

﴾1﴿ मनी कपड़े में लग कर ख़ुश्क हो गई तो फ़क़त मल कर झाड़ने और साफ़ करने से कपड़ा पाक हो जाएगा अगर्चे बा'द मलने के कुछ इस का असर कपड़े में बाक़ी रह जाए। (ऐज़न, स. 122) **﴾2﴿** इस मस्अले में औ़रत व मर्द और इन्सान व हैवान व तन्दुरुस्त व मरीज़े जिरयान सब की मनी का एक हुक्म है। (ऐज़न) **﴾3﴿** बदन में अगर मनी लग जाए तो भी इसी त़रह़ पाक हो जाएगा। (ऐज़न) **﴾4﴿** पेशाब कर के त़हारत न की पानी से न ढेले से और मनी उस जगह पर गुज़री जहां पेशाब लगा हुवा है, तो येह मलने से पाक न होगी बल्कि धोना ज़रूरी है और अगर त़हारत कर चुका था या मनी जस्त कर के (या'नी उछल कर) निकली कि उस मौज़ए नजासत (या'नी नापाक जगह) पर न गुज़री तो मलने से पाक हो जाएगी। (ऐज़न, स. 123) **﴾5﴿** जिस कपड़े को मल कर पाक कर लिया (अब) अगर वोह पानी से भीग जाए तो नापाक न होगा। (ऐज़न) **﴾6﴿** अगर मनी कपड़े में लगी है और अब तक तर है (बिग़ैर सुखाए पाक करना चाहें) तो धोने से पाक होगा (सूखने से क़ब्ल) मलना काफ़ी नहीं। (ऐज़न)

दूसरे के नापाक कपड़े की निशान देही कब वाजिब है

किसी दूसरे मुसल्मान के कपड़े में नजासत लगी देखी और ग़ालिब गुमान है कि इस को ख़बर करेगा तो पाक कर लेगा तो ख़बर करना वाजिब है। (ऐसी सूरत में ख़बर नहीं देगा तो गुनहगार होगा) । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 127) इस्लामी बहन ने अगर ना मह़रम म–सलन भाभी ने देवर के कपड़े में नजासत देखी तो बताना ज़रूरी नहीं।

रूई पाक करने का त़रीक़ा

रूई का अगर इतना ह़िस्सा नजिस (नापाक) है जिस क़दर धुनने से उड़ जाने का गुमाने सह़ीह़ हो तो धुनने से (रूई) पाक हो जाएगी वरना बिग़ैर धोए पाक न होगी, हां अगर मा'लूम न हो कि कितनी नजिस (नापाक) है तो भी धुनने से पाक हो जाएगी।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 125, मक–त–बतुल मदीना)

बरतन पाक करने का त़रीक़ा

अगर ऐसी चीज़ हो कि इस में नजासत जज़्ब न हुई, जैसे चीनी के बरतन या मिट्टी का पुराना इस्ति'माली चिकना बरतन या लोहे, तांबे, पीतल वग़ैरा धातों की चीज़ें तो उसे फ़क़त तीन बार धो लेना काफ़ी है,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

इस की भी ज़रूरत नहीं कि उसे इतनी देर तक छोड़ दें कि पानी टपकना मौक़ूफ़ हो जाए। (ऐज़न, 121)

छुरी चाकू वग़ैरा पाक करने का त़रीक़ा

लोहे की चीज़ जैसे छुरी, चाकू, तलवार वग़ैरा जिस में न ज़ंग हो न नक़्शो निगार, नजिस हो जाए तो अच्छी त़रह़ पूंछ डालने से पाक हो जाएगी और इस सूरत में नजासत के दलदार या पतली होने में कुछ फ़र्क़ नहीं। यूंहीं चांदी, सोने, पीतल, गिलट और हर क़िस्म की धात की चीज़ें पूंछने से पाक हो जाती हैं बशर्ते कि नक़्शी न हों और अगर नक़्शी हों या लोहे में ज़ंग हो तो धोना ज़रूरी है पूंछने से पाक न होंगी।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 122, मक-त-बतुल मदीना)

आईना पाक करने का त़रीक़ा

आईना और शीशे की तमाम चीज़ें और चीनी के बरतन या मिट्टी के रोग़नी बरतन (या मिट्टी के वोह बरतन जिन पर कांच की पतली तेह चढ़ी होती है) या पॉलिश की हुई लकड़ी ग़रज़ वोह तमाम चीज़ें जिन में मसाम न हों, कपड़े या पत्ते से इस क़दर पूंछ ली जाएं कि (नजासत का) असर बिल्कुल जाता रहे पाक हो जाती हैं। (ऐज़न) मगर ख़याल रहे कि दराड़ हो, या कहीं से कुछ उखड़ा हुवा हो या कोई ह़िस्सा टूटा हुवा हो या कहीं से पॉलिश निकल गई हो अल ग़रज़ किसी त़रह़ का भी

खुरदरा पन होने की सूरत में उस ह़िस्से का पूंछना काफ़ी न होगा धो कर पाक करना ज़रूरी है।

जूते पाक करने का त़रीक़ा

मोज़े (चमड़े के) या जूते में दलदार नजासत लगी, जैसे पाख़ाना, गोबर, मनी तो अगर्चे वोह नजासत तर हो खुरचने और रगड़ने से पाक हो जाएंगे। और अगर मिस्ल पेशाब के कोई पतली नजासत लगी हो और उस पर मिट्टी या राख या रैता वग़ैरा डाल कर रगड़ डालें जब भी पाक हो जाएंगे और अगर ऐसा न किया यहां तक कि वोह नजासत सूख गई तो अब बे धोए पाक न होंगे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 123)

काफ़िरों के इस्ति'माल शुदा स्वेटर वग़ैरा

कुफ़्फ़ार के मुमालिक से दरआमद किये हुए (IMPORTED) इस्ति'माल शुदा स्वेटर (SWEATER) जुराबें, क़ालीन (CARPET) और दीगर पुराने कपड़े कि जब तक इन पर नजासत का असर ज़ाहिर न हो पाक हैं बिग़ैर धोए नमाज़ में इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं, अलबत्ता पाक कर लेना मुनासिब है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 2 **सफ़ह़ा** 127 पर फ़रमाते हैं : फ़ासिक़ों के इस्ति'माली कपड़े जिन का नजिस

होना मा'लूम न हो पाक समझे जाएंगे मगर **बे नमाज़ी** के पाजामे वग़ैरा में एह़तियात़ येही है कि रूमाली पाक कर ली जाए कि अक्सर बे नमाज़ी पेशाब कर के वैसे ही पाजामा बांध लेते हैं और कुफ़्फ़ार के इन कपड़ों के पाक कर लेने में तो बहुत ख़याल करना चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 127)

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा का पड़ोस

27 र-जबुल मुरज्जब **1429** हि.

आप बोल कर बारहा पछताए होंगे
मगर ख़ामोश रहने की वजह से पछताना
बहुत कम हुवा होगा। एक चुप सो100 सुख।

मआख़िज़ो मराजेअ़

नाम किताब	**मत़्बूआ**
1. मज्मउ़ज़्ज़वाइद	दारुल फ़िक्र बैरूत
2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान	पिशावर
3. फ़तावा आ़लमगीरी	कोएटा
4. दुर्रे मुख़्तार रद्दुल मुह़तार	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत
5. फ़तावा र-ज़विय्या	रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर
6. बहारे शरीअ़त	मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

786 फ़ेहरिस 92

उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1
नजासत की अक़्साम	2
नजासते ग़लीज़ा	2
दूध पीते बच्चों का पेशाब नापाक है	4
नजासते ग़लीज़ा का हुक्म	4
दिरहम की मिक़्दार की वज़ाह़त	5
नजासते ख़फ़ीफ़ा	6
नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म	7
जुगाली का हुक्म	7
पित्ते का हुक्म	8
जानवरों की क़ै	8
दूध या पानी में नजासत पड़ जाए तो...?	10
दीवार, ज़मीन, दरख़्त वग़ैरा कैसे पाक हों ?	10
ख़ून आलूद ज़मीन पाक करने का त़रीक़ा	12
गोबर से **लीपी** हुई ज़मीन	12
जिन परन्दों की बीट पाक है	13
मछली का ख़ून पाक है	13
पेशाब की बारीक **छींटें**	13
गोश्त में बचा हुवा ख़ून	14
जानवरों की सूखी हड्डियां	14

उ़न्वान	सफ़्हा
ह़राम जानवर का दूध	14
चूहे की मेंगनी	15
ग़लाज़त पर बैठने वाली मख्खियां	15
बारिश के पानी के अह़काम	16
गलियों में खड़ा हुवा बारिश का पानी	17
सड़क पर छिड़के जाने वाले पानी के छींटे	18
ढेलों से पाकी लेने के बा'द आने वाला पसीना	18
कुत्ता बदन से छू जाए	18
कुत्ता आटे में मुंह डाल दे तो ?	19
कुत्ता बरतन में मुंह डाल दे	19
बिल्ली पानी में मुंह डाल दे तो ?	19
तीन म-दनी मुन्नियों की मौत का अलम नाक वाक़िआ़	20
जानवरों का पसीना	12
गधे का पसीना पाक है	21
ख़ून वाले मुंह से पानी पीना	21
औ़रत के पर्दे की जगह की रुत़ूबत	21
सड़ा हुवा गोश्त	22
ख़ून की शीशी	22
मय्यित के मुंह का पानी	22

786 फ़ेहरिस 92

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
नापाक बिछोना	23	वॉशिंग मशीन में कपड़े पाक	32
गीली रूमाली	23	करने का त़रीक़ा	
इन्सानी खाल का टुकड़ा	23	नल के नीचे कपड़े पाक करने का	32
उपला (सूखा हुवा गोबर)	24	त़रीक़ा	
तवे पर नापाक पानी छिड़क दिया तो ?	24	कारपेट पाक करने का त़रीक़ा	33
ह़राम जानवर का गोश्त और चमड़ा	24	नापाक महंदी से रंगा हुवा हाथ कैसे	34
कैसे पाक हो		पाक हो ?	
बकरे की खाल पर बैठने से	25	नापाक तेल वाला कपड़ा धोने	34
आ़जिज़ी पैदा होती है		का मस्अला	
गाढ़ी नजासत वाला कपड़ा किस	25	अगर कपड़े का थोड़ा सा ह़िस्सा	35
त़रह़ धोए		नापाक हो जाए	
अगर नजासत का रंग कपड़े पर	26	दूध से कपड़ा धोना कैसा ?	35
बाक़ी रह जाए तो ?		मनी वाले कपड़े पाक करने के	36
पतली नजासत वाला कपड़ा पाक करने	26	6 अह़काम	
के मु-तअ़ल्लिक़ 6 म-दनी फूल		दूसरे के नापाक कपड़े की	37
बहते नल के नीचे धोने में निचोड़ना	28	निशान देही कब वाजिब है	
शर्त़ नहीं		रूई पाक करने का त़रीक़ा	37
बहते पानी में पाक करने में निचोड़ना	29	बरतन पाक करने का त़रीक़ा	37
शर्त़ नहीं		छुरी चाक़ू वग़ैरा पाक करने का त़रीक़ा	38
पाक नापाक कपड़े साथ धोने का मस्अला	29	आईना पाक करने का त़रीक़ा	38
नापाक कपड़े पाक करने का		जूते पाक करने का त़रीक़ा	39
आसान त़रीक़ा	30	काफ़िरों के इस्ति'माल शुदा स्वेटर वग़ैरा	39

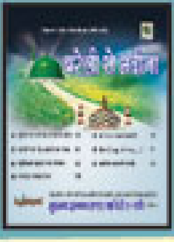

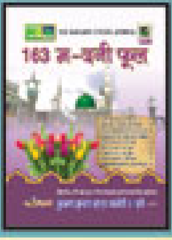

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते **इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है** إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कॉम्प्लेक्स, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रिज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860